IJAER/March-April 2021 /Volume-10/Issue 5 ISSN: 2278-9677

International Journal of Arts & Education Research

मन्नू भण्डारी के उपन्यासों में स्त्री–चेतना का विश्लेषण

Swati

Ph.D. Scholar

Department of Hindi

Malwanchal University Indore, (M.P.).

DR. Shobha Ratudi

Supervisor

Department of Hindi

Malwanchal University Indore, (M.P.).

सार

स्वतन्त्रता के बाद के हिन्दी साहित्य में अनेक नई महिला लेखिकाएँ उभरीं और उन्होंने पाठकों और आलोचकों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया लेकिन शुरुआती चमक के बाद उनमें से कुछ ने अपने सफल करियर का लेखन नहीं किया। साहित्यिक लेखन के क्षेत्र में कई महिला लेखिकाओं ने प्रवेश किया है। कई उच्च प्रतिभाशाली लेखिकाओं ने अपने रचनात्मक लेखन से हिंदी साहित्य को समृद्ध किया है। उषा प्रियंवदा, मालती जोशी, दीप्ति खंडेलवाल, मृदुला गर्ग, मन्नू भण्डारी , शोभा वर्मा कुछ सबसे कुशल समकालीन हिंदी महिला लेखिका हैं। उनका लेखन दर्शाता है कि कैसे आधुनिकता, समकालीन सामाजिक परिस्थितियों, और जीवन में धाराओं, और क्रॉस–करंट ने उनके लेखन और विषय वस्तु के साथ–साथ उन पर प्रभाव डाला है। इसके विपरित अर्थात, इन महिला लेखकों ने समकालीन भारत की पृष्ठभूमि के खिलाफ भारतीय महिलाओं, उनके दर्द, संघर्ष, दुर्दशा के बारे में लिखा है। उन्होंने न केवल बाहरी स्थिति और संघर्ष पर बल्कि आधुनिक महिलाओं की आंतरिक उथल–पुथल पर भी अपना ध्यान केंद्रित किया है। इस संदर्भ में मन्नू भण्डारी जैसे लेखक विशेष ध्यान देने योग्य हैं। उन्होंने लघु कथा उपन्यास, एक राजनीतिक उपन्यास, बच्चों के लिए साहित्य, नाटक, पटकथा, और फिल्म के संवाद आदि जैसे साहित्य की विभिन्न शैलियों में लिखा और प्रयोग किया है। मन्नू भण्डारी ने विक्रम में प्रेमचंद सृजनपीठ के निर्देशन की भी अध्यक्षता की है। 2008 में मन्नू भण्डारी को उनकी आत्मकथा 'एक कहानी' के लिए वर्ष 2008 के लिए प्रतिष्ठित व्यास सम्मान दिया गया था, जिसे के.के. बिड़ला फाउंडेशन और हर साल एक भारतीय नागरिक द्वारा लिखित हिंदी में उत्कृष्ट साहित्यिक कार्य के लिए दिया जाता है।

मुख्य शब्दः– *साहित्य, उपन्यास और सामाजिक परिस्थितियों।*

प्रस्तावना

3 अप्रैल 1931 को मध्य प्रदेश के भानपुरा में जन्में, उनके पिता सुखसंपत राय भण्डारी एक समाज सुधारक, स्वतंत्रता सेनानी और हिंदी साहित्यिक शब्दकोश के निर्माता थे। एक रचनात्मक लेखक के रूप में भण्डारी ने छह उपन्यास, नौ लघु कहानी संग्रह, दो पूर्ण–लंबाई वाले नाटकों, एक–एक्ट नाटकों का एक संग्रह, बच्चों के लिए तीन काम, पटकथा और संवाद लेखन के साथ हिंदी साहित्य का योगदान दिया।

भण्डारी दिल्ली में रहते हैं। बचपन से ही उनके घर में साहित्य एक आम बात थी क्योंकि उनके पिता सुखसंपत राय स्वतंत्रता संग्राम के दौरान एक कार्यकर्ता और साहित्यकार थे। उन्होंने अजमेर में अपनी इंटरमीडिएट की शिक्षा पूरी की। उन्होंने कलकत्ता से स्नातक की उपाधि प्राप्त की। चूंकि उसने बीए पास नहीं किया था। हिंदी के साथ, उन्होंने काशी हिंदू विश्व विद्यालय से हिंदी में एमए किया। उन्होंने नौ साल तक कलकत्ता के 'बालीगंज शिक्षा सदन' में पढ़ाना शुरू किया। अध्यापन उसका सबसे पसंदीदा काम है इसलिए शायद यही कारण है कि उसके कई नायक शिक्षक हैं। उन्होंने कलकत्ता के रानी बिड़ला कॉलेज में तीन साल तक पढ़ाया। 1964 के बाद से, उन्होंने दिल्ली के मिरांडा हाउस कॉलेज में एक शिक्षिका के रूप में काम किया। उन्होंने अपनी रुचि के बारे में कहा कि: 'मैं कभी–कभी अपने शौक से लिखती हूं लेकिन मेरी मूल पंक्ति पढ़ाना है।'

उनकी पहली कहानी 1954 में नया समाज में प्रकाशित हुई थी, लेकिन कहानी पत्रिका में अपनी दूसरी कहानी 'मैं हार गई' प्रकाशित करने के बाद उन्हें कहानीकार के रूप में प्रसिद्धि मिली। संपादक भैरव प्रसाद गुप्ता ने उन्हें निरंतर लेखन के लिए प्रोत्साहित किया। 1957 में लघु कथाओं का पहला संग्रह 'मैं हार गई' भारत में प्रकाशित हुआ। तब से उन्होंने लघु कथाओं के आठ अन्य संग्रह निकाले।

मन्नू भण्डारी की कहानियों में यथार्थ बोध

हिन्दी साहित्य की विधाएँ: हिन्दी साहित्य की मुख्य तीन विधाएँ हैं –

1. काव्य
2. गद्द

3. चम्पू काव्य।

गद्द साहित्य के अंतर्गतदृ कहानी, जीवनी, आत्मकथा, नाटक, एकांकी, निबंध आदि अनेक विधाएँ हैं। गद्द की सभी विधाओं में कहानी की विधा सबसे पुरानी मानी जाती है। कहानी का आरम्भ कब और कहाँ हुआ यह बताना कठिन है। पुराणों और इतिहासों में भी कहानियाँ दिखाई पड़ती हैं जैसे– ईसॉप कथाएं, पंचतंत्र कथाएँ, जातक कथाएँ आदि। ये आज के समय में भी बहुत मशहूर हैं। यहाँ हम कह सकते हैं– सोने की चमक कभी भी कम नहीं होती है। यह निर्विवाद सत्य है कि मानव के मन को प्रभावित करने के लिए कहानी में अद्भूत क्षमता होती है। पहले कहानी का उद्देश्य, उपदेश देना और मनोरंजन करना माना जाता था लेकिन आज कहानियों का मुख्य उद्देश्य मानव जीवन की विविध प्रकार की समस्याओं और संवेदनाओं को आम जनता तक पहुंचाना है। यही कारण है कि प्राचीन कहानियों से आधुनिक हिन्दी कहानियाँ बिल्कुल ही अलग हैं।

कहानी के तत्व– साधारणतया कहानी के छःतत्व माने गए है-

1. कथावस्तु, 2. चरित्र–चित्रण, 3. संवाद, 4. देशकाल या वातावरण, 5.उद्देश्य और

6 शैली।

कथावस्तु– कथावस्तु कहानी का प्रमुख अंग है। कथावस्तु के बिना कहानी की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। कथावस्तु जीवन की अनेक दिशाओं और क्षेत्रों से लिया जाता है जैसे–पुराण, इतिहास, समाज, राजनीति आदि। इनमे से किसी भी विषय को चुनकर कहानीकार अपनी महल खड़ी कर सकता है।

चरित्र– चित्रण कहानी जिस व्यक्ति की होती है वही उस कहानी का चरित्र कहलाता है लेकिन कहानियों में चरित्रों की संख्या कम होनी चाहिए। तभी कहानीकार किसी चरित्र के अन्दर और बाहर दोनों पक्षों का अधिक से अधिक विश्लेषण कर सकता है।

संवाद– पहले संवाद कहानी का अभिन्न अंग माना जाता था। अब इसकी अनिवार्यता समाप्त हो गई है। आज ऐसी अनेकानेक कहानियाँ लिखीं गई है या लिखी जा रहीं है जिसमे संवाद का एकदम अभाव रहता है। सारी कहानियाँ वर्णनात्मक या मनोविश्लेषनात्मक शैली में लिखी जा रही हैं। इसलिये

संवाद उतना अधिक महत्व नहीं रह गया है। फिर भी हम कह सकते हैं कि संवाद से कहानी के पात्र सजीव और स्वभाविक बन जाते हैं और कथा–वस्तु सम्वाद के माध्यम से पाठकों को बांधे रखता है।

देशकाल– कहानी देश काल की उपज होती है। इसलिए हर देश की कहानी एक दुसरे से अलग होती है। भारत या किसी भी भू–भाग की लिखी कहानियों का अपना वातावरण होता है जिसकी संस्कृ ति, सभ्यता, रूढ़ि संस्कार का प्रभाव उस कहानी के उपर स्वभाविक रूप से पड़ता है।

उद्देश्य– उद्देश्य कहानी का एक तत्व माना जाता है क्योंकि सच तो यह है कि किसी भी विधा की रचना निरुद्देश्य नहीं होता है। हर कहानी के पीछे कहानीकार का कोई न कोई प्रयोजन जरुर होता है। यह उद्देश्य कहानी के आवरण में छिपा होता है।

शैली– शैली कहानी के कलेवर को सुसज्जित करने वाला कलात्मक आवरण होता है। इसका सम्बंध कहानीकार के आतंरिक और बाहरी पक्षों से रहता है। कहानीकार की शैली ऐसी होनी चाहिए जो पाठकों को अपनी ओर आकर्षित कर सके। यह काम भाषा शक्ति के द्वारा होती है।

मन्नू भण्डारी के उपन्यासों में स्त्री–चेतना का विश्लेषण

स्वातन्त्र्योत्तर हिन्दी साहित्य को संवेदनशील मूल्यधर्मी साहित्यकारों ने एक नया आकाश दिया है। नवीन एवं असाधारण महत्त्व के स्वतन्त्र चिन्तन करने वाले साहित्यकारों में जैनेन्द्र कुमार, भीष्म साहनी, मोहन राकेश, मन्नू भण्डारी , कृष्णा सोबती, मृदुला गर्ग, मंजुला भगत, नासिरा शर्मा, कमलेश्वर आदि नामों की एक लम्बी शृंखला है। मन्नू भण्डारी के स्त्री विषयक चिन्तन ने हिन्दी कथा–साहित्य, उपन्यास और नाट्य–साहित्य को एक नया आयाम दिया है। आज भारतीय आधुनिकता संक्रामक स्थिति से गुजर रही है, प्राचीन भारतीय संस्कृति अपने अस्तित्व को बचाये रखने के लिए संघर्षरत है तो पाश्चात्य जीवन–शैली अपने पाँव प्रसार रही है। ऐसे में आधुनिक नारी की ज्वलन्त समस्याओं को उठाने का बीड़ा जिन महिला कथाकारों ने उठाया है, उनमें मन्नू जी का विशिष्ट स्थान है।

मन्नूजी के व्यक्तित्व की छाया उनके लेखन में स्पष्ट दृष्टिगोचर होती है, वह नारी को उसकी पहचान देती हैं। मन्नू के अनुसार उसके अन्दर अच्छाई भी है, बुराई भी है। वह कोई देवी नहीं है और न ही दानवी है। शायद इसी कारण आज भी उनकी लेखनी में पूरी विश्वसनीयता है। अपनी मौलिकता के कारण उनकी कृतियाँ दिशा–निर्देशन का कार्य करती हैं। उनका सम्पर्क सभी प्रकार के रचना स्रोतों

से बना हुआ है। इनका अन्वेषण यथार्थवादी मूल्यों का है। तीन दशकों से भी अधिक समय तक वे अपने कृतित्व के बल पर हिन्दी महिला साहित्यकारों में अग्रणी बनी रहीं। वे कृष्णा सोबती एवं अमृता प्रीतम के समान अश्लीलता की हद नहीं पार करतीं, यही कारण है कि उनका स्त्री–पुरुष सम्बन्ध–विश्लेषण भी एक सीमा के अन्दर ही होता है।

आधुनिक नारी के दु:खों को मन्नू जी ने भली–भाँति समझा। एक सफल चित्रकार के समान अपने कथा–साहित्य में उन्हें वर्णित और रेखांकित किया। उनकी पात्राएँ सीता के समान देवी नहीं हैं, न ही कलियुगी कलंकिनी हैं वरन् यथार्थ नारी हैं जो सोचती हैं, समझती हैं। वे हाड़–माँस का पुतला हैं, दु:ख–सुख वासना–प्रेम सभी भावनाएँ महसूस करती हैं।

उनकी लेखन–शैली पर टिप्पणी करते हुए कवि अजीत कुमार लिखते हैं" उनका लेखकीय व्यक्तित्व किसी विधा में सिमटने, सिकुड़ने, गहराने के स्थान पर विस्तृत और व्यापक होता गया है। उसके आयाम सुलझते जा रहे हैं।

मन्नूजी ने नारी–समस्याओं को चित्रित करने के लिए कहानी, उपन्यास और नाटक आदि साहित्य की विभिन्न विधाओं में अपनी लेखनी चलाई और प्रत्येक विधा में उनका लेखन अत्यन्त सफल रहा। रूढ़ियों के प्रति विद्रोह उनके लेखन का उजागर पक्ष है। उनकी लेखनी से उपजी नारी एक अस्तित्ववान् सचेतन प्राणी है। उनके अनुसार पारिवारिक समस्याओं की जनक सिर्फ नारी ही नहीं हैय वरन् परिवार के समस्त सदस्य उसके लिये जिम्मेदार होते हैं।

इस तरह हिन्दी साहित्य में नारी–विमर्श के परिप्रेक्ष्य में मन्नू जी एक सशक्त हस्ताक्षर हैं। उनका कथ्य, शिल्प और यथार्थ अनुभव हर आधुनिक पाठक के लिये उसके हृदय और मस्तिष्क दोनों का भोजन है। उन्होंने स्त्री–विमर्श सम्बन्धी कहानियों और नाटक के अतिरिक्त उपन्यास भी लिखे हैं। उनके द्वारा लिखित 'आपका बंटी' तो नारी–विमर्श का शाहकार उपन्यास है।

मन्नू भण्डारी ने अब तक पाँच उपन्यासों का लेखन किया है। इन्होंने इनमें आधुनिक समाज के उन चरित्रों को लिया है, जो हर समय अस्तित्व संग्राम में जूझते रहे हैं, हर समय अपने अस्तित्व को साबित करना चाहते हैं, जीवन जीना चाहते हैं। वे चुपचाप रहकर, उदास रहकर अपना जीवन समाप्त नहीं करना चाहते।

कलवा – कलवा एक बाल उपन्यास है। यह उपन्यास पंचतन्त्र की कथाओं पर आधारित है। इस उपन्यास का मुख्य पात्र 'कलवा' नाम का एक बालक है, जो उपेक्षित वर्ग का होते हुए भी ईमानदार और मेहनती है। वह अपने सद्गुणों से कैसे राजा बन जाता है इसी बात को आधार बनाकर इस उपन्यास के माध्यम से बच्चों को सद्वृत्तियों की शिक्षा दी गयी है। राजपुत्र, साहूकार के पुत्र और कलवा से गुरु जी पूछते हैं कि

.1 दुनिया में सबसे बड़ी शक्ति क्या है? .2 सबसे शक्तिशाली कर्ता कौन है? और .3तुम आगे चलकर क्या करोंगे?

राजपुत्र का उत्तर था -दुनियाँ में सबसे बड़ी शक्ति है भाग्य। सबसे बड़ा कर्ता है मनुष्य का प्रारब्ध। मैं अपने पिता से प्राप्त राज्य का भोग करूँगा।

साहूकार के पुत्र का उत्तर था- दुनियाँ में सबसे बड़ी शक्ति है धन। सबसे बड़ा कर्ता है मनुष्य की बुद्धि। मेरी इच्छा है कि मैं अपने पिता की पाँच हजार गाँवों की जागीर को दस हजार की कर दूँ।

एक इंच मुस्कान- यह उपन्यास मन्नू भण्डारी और राजेन्द्र यादव के संयुक्त लेखन का परिणाम है। दो सौ पृष्ठों एवं चौदह परिच्छेदों में विभक्त यह उपन्यास तीन पात्रों के इर्द–गिर्द घूमता है। प्रेम त्रिकोण के विषय पर आधारित इस उपन्यास में शिथिलता का कहीं भी आभास नहीं होता। जिम्मेदारियाँ उठाना ही दाम्पत्य जीवन का लक्ष्य नहीं है, आज सम्बन्धों में ऊष्मा होना भी आवश्यक है। आज नारी केवल दो रोटी के साथ अपमान का घूट नहीं पी सकती। भूखी रह सकती है, पर स्वाभिमान पर आघात बर्दाश्त नहीं कर सकती। 'अमर' एक उभरता हुआ नवीन लेखक है। उसकी प्रेयसी 'रंजना' है, जो उसकी कृतियों की प्रेरणा बनना चाहती है। वह अमर से प्रेम तो करती है, पर कभी खुलकर सामने नहीं आती। अपनी भावनाओं को संतृप्त करने के लिये वह अमर को एक साधन बनाती है। 'अमला' के साथ विवाह करने की इच्छा को दबाने का प्रयत्न करती है। वह न खुद शादी करती है न ही करने देती है। रंजना के मन के कोने में एक ईर्ष्या जाग्रत् होती है कि अमला कहीं अमर को उससे छीन न ले। अमर अमला से विवाह कर लेता है। विवाह के बाद ही कल्पना से यथार्थ को

आँखें चार करना पड़ता है। यह मजबूरी ही है कि जिम्मेदारी पड़ते ही विवाह में एक दुर्भाग्यपूर्ण घटना घटने लगती है। दाम्पत्य जीवन पति–पत्नी के आपसी विश्वास पर आधारित होता है।

आपका बंटी -'आपका बंटी' उपन्यास मन्नू भण्डारी का शाहकार (सर्वश्रेष्ठ कृति) है। यह कहना गलत नहीं होगा कि यह मन्नू भण्डारी का ही नहीं अपितु उस समय का हिन्दी साहित्य का दिशा–निर्देशक उपन्यास था, क्योंकि उस समय तक हिन्दी का उपन्यास साहित्य 'सब दिन चले अढ़ाई कोस' वाली स्थिति में अर्थात् घिसी पिटी लीक पर था, पर इस उपन्यास ने लेखन को एक नया आयाम दिया। नारी मनोविज्ञान, पुरुष के 'ईगो' और उसके परिणाम को यह उपन्यास अत्यन्त बारीकी से प्रकट करता है।

मन्नू भण्डारी का उपन्यास 'आपका बंटी' आधी आधुनिकता की कहानी है। महानगर की पारिवारिक समस्याओं की अनगिनत श्रृंखलाए हैं। जीवन एक शाप बनकर रह गया है। इसमें शकुन को केन्द्र बनाया गया है। शकुन और उसके पति अजय के बीच अहम् भाव बढ़कर वृहद् समस्या का रूप धारण कर लेता है। 'ईगो' की समस्या बढ़ती है तो दोनों अलग–अलग रहने लगते हैं। मामला तलाक तक पहुँच जाता है। हालाँकि यह भारतीय संस्कृति और सामाजिक परम्परा के विरुद्ध है। लेखिका फूफी के द्वारा इस परम्परा की तरफदारी और थाना–कचहरी, तलाक आदि के विरुद्ध स्वर प्रकट करती है –

''हमारे तन–बदन में आग लगी हुई है इस बखत। बहू को ले जाकर थाना–कचहरी में खड़ा करेंगे। मर्दानगी दिखाएँगे। अरे हाथ पकड़कर निभाने की मर्दानगी जिनमें नहीं होती, वह ऐसे ही मर्दानगी दिखाते हैं।

उपसंहार

'बंटी के तत्काल संदर्भ अजय और शकुन हैं। अजय, शकुन और बंटी इस त्रिकोण के विषय में यह भी ध्यान देना आवश्यक है कि पुरुष नारी से परम्परा से ही अपेक्षा रखता आया है और रखता है, यहाँ अजय और बंटी दोनों पुरुष पात्र हैं और दोनों को ही शकुन से अपेक्षा है अजय को सम्पूर्ण पत्नी की और बंटी को सम्पूर्ण माँ की। शकुन उन दोनों की अपेक्षाओं के बीच अपने को पिसती सी महसूस करती है, उसका अपना एक व्यक्तित्व है, जो माँ और पत्नी होते हुए भी पूर्ण समाहित नहीं हो पाता

कुछ पृथक् रहता है। इस विषय में स्वयं शकुन सोचती है 'अजय ने भी न जाने क्या चाहा था उससे। वह नहीं दे पाई, तो अजय उसकी जिन्दगी से निकल गया। अब बंटी भी कुछ चाहता है।' शकुन सोचती है –

"सब लोग केवल उससे चाहते ही हैं और वह उनकी चाहनाओं को पूरा करती रहे। यही एकमात्र रास्ता है उसके लिये। बस, वह कुछ न चाहे। जहाँ चाहती है, वहीं गलत क्यों हो जाती है? ऐसा अनुचित–असम्भव भी तो उसने कुछ नहीं चाहा। एक सहज सीधी जिन्दगी, जिसमें रहकर वह कम से कम यह तो महसूस कर सके कि वह जिन्दा है। केवल सूरज डूब–उग कर ही उसे रात होने और बीतने का एहसास न कराये, उसके अतिरिक्त भी 'कुछ' हो बंटी शकुन का बेटा है और उसे पापा के रूप में अजय की आवश्यकता तो है, पर वह शकुन के साथ गहरे से जुड़ा है, उससे वह अलग नहीं रह सकता।

वस्तुतः इस उपन्यास के लेखन का मन्नू भण्डारी का उद्देश्य समाज में बंटी के प्रति करुणा पैदा करना नहीं है, वे शरतचन्द्र चट्टोपाध्याय की भाँति भावुकता जगाने का प्रयास नहीं करती हैं बल्कि वे समाज के सामने बंटी की समस्या रखकर यह अपेक्षा करती हैं कि पुनः ऐसी समस्या न उत्पन्न हो'।

सन्दर्भ ग्रंथ

- वही, पृ. 223
- वही, पृ. 279
- वही, पृ. 213
- प्रगतिशील वसुधा 86, मर्द सत्ता की घेरेबंदी और स्त्री विमर्श, वीरेंद्र यादव, जुलाई–सितम्बर 2010, पृ. 220
- पहल, स्त्री रचनाकारों के एक्टीविस्ट होने की जरूरत कात्यायनी, जनवरी 2001, पृ. 79
- कुकांता राधवानी, डॉ. अनीता सिंह (2018) ''मन्नू भंवर की महिला के विवाह में महिला के संघ'' पर, अंतर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका, वॉल्यूम, 6 नंबर 5

- प्रीता मणि (2020) पर ''फेमिनिन डिजायर इज ह्यूमन डिजायरः वूमेन राइटिंग फेमिनिज्म इन पोस्ट इंडिपेंडेंस इंडिया'', वॉल्यूम। 26, नहीं।
- स्टॉर्क–न्यूहाउस, नैन्सी डीन (2018) मन्नू भण्डारी द्वारा ''त्रिशंकु और अन्या कहानीयम'' से दो कहानियां। ए ट्रांसलेशन एंड कमेंट्री'', द यूनिवर्सिटी ऑफ एरिजोना।
- ''गोखले, नमिता (2019) राजुल भार्गव में ''जेंडर एंड लिटरेरी सेंसिबिलिटी'' ''इंडियन राइटिंग इन इंग्लिशः द लास्ट डिकेड। जयपुरः रावत पब्लिकेशन्स।
- मन्नू भण्डारी , नकली हीरे (मेरी कहानियाँ), पृष्ठः
- मन्नू भण्डारी , कील और कसक (मेरी कहानियाँ),